विदेशी खरपतवारों के भी औषधिय उपयोग विकसित कर लिये हैं छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सकों ने

* गेहूँसा से गंजेपन और गाजर घास से कैंसर की चिकित्सा

* 25 से अधिक विदेशी खरपतवारों का पारंपरिक उपयोग

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे ं जुटे हुये वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य के पारंपरिक चिकित्सकों ने विदेशी खरपतवारों गेहूंसा, लेन्टाना, गाजर घास, जल कुंभी, इयुपेटोरियम आदि के औषधिय उपयोग विकसित कर लिये है। इन खरपतवारों का प्रयोग वे विभिन्न रोगों की चिकित्सा मे बाहरी और आंतरिक तौर पर कर रहे है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में किये जा रहे एथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि गेहूँ की फसल के साथ उगने वाले खरपतवार गेहूँसा का प्रयोग राज्य के पारंपरिक चिकित्सक गंजेपन की चिकित्सा मे कर रहे है। ताजे पौधो को तिल के तेल मे उबालकर औषधि तेल का निर्माण किया जाता है। यह तेल बालों के लिये विशेष उपयोगी माना जाता है। ताजे पौधे के लेप का प्रयोग सूखी खुजली मे बाहरी तौर पर किया जाता है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक विभिन्न प्रकार की सूजन की चिकित्सा मे गेहूँसा का प्रयोग आंतरिक तौर पर करने की सलाह देते है। वायु रोगो के लिये भी यह उपयोगी है। इसी तरह घातक जलीय खरपतवार जलकुंभी का प्रयोग पारंपरिक चिकित्सक सिरका के साथ घावों की चिकित्सा में करते है। जलकुंभी मे अंदरुनी घावों को ठीक करने की अपूर्व क्षमता होती है। घेंघा जैसे रोगों की चिकित्सा मे भी जलकुंभी का प्रयोग किया जा रहा है। पेशाब रुकने की बीमारी मे जलकुंभी की पत्तियों का प्रयोग बाहरी और आंतरिक दोनो ही रुप मे किया जाता है। छतीतसगढ़ मे लेन्टाना भी अधिकतर सभी भागों मे पाया जाता है। इसे स्थानीय भाषा मे गोटीफूल और माछी मुड़ी कहा जाता है। बिलाड़ी क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक मुख रोगों की चिकित्सा मे लेन्टाना की टहनियों का प्रयोग करते है। इन टहनियों को दातून के रुप प्रयोग में किया जाता है। लेन्टाना की टहनियों का दातुन के रुप में मुख रोगों की चिकित्सा मे उपयोग उन देशों के संदर्भ साहित्यों मे भी नही मिलता है जहाँ का यह मूल निवासी है। अन्य वनौषधियों के साथ लेन्टाना के फलों का उपयोग यकृत संबंधी रोगों की चिकित्सा मे पारंपरिक चिकित्सक कर रहे हैं। मनुष्यों और पशुओं में श्वांस रोग, मानसिक अवसाद और त्वचा रोग उत्पन्न करने वाली गाजर घास का प्रयोग उन पारंपरिक चिकित्सकों के बीच लोकप्रिय है जो कि विभिन्न प्रकार के कैंसर की चिकित्सा मे दक्षता रखते है। रोग की अंतिम अवस्था मे गाजर घास के पौधओं से तैयार काढ़े का प्रयोग किया जाता है। पशु रोगों मे भी गाजर घास का प्रयोग आरंभ हो चुका है। इन खरपतवारों को उपयोग करने के पूर्व पारंपरिक चिकित्सक इन्हे विशेष वानस्पतिक घोलों से उपचारित करते है। गेहूँसा जैसे खरपतवारों को उन खेतों से एकत्र किया जाता है जहाँ जैविक खेती पद्धत्तिअपनायी जा रही होती है। पंकज अवधिया ने अब तक 25 से भी अधिक विदेशी खरपतवारों के विषय में उपलब्ध पारंपरिक चिकित्सकीय ज्ञान का दस्तावेजीकरण किया है। उनका मानना है कि विदेशी खरपतवारों के नये उपयोग एक क्रांति के प्रारंभ के समान है। पूरे देश मे इन विदेशी खरपतवारों ने आतंक मचा रखा है। प्रतिवर्ष करोड़ों रुपयों के कृषि रसायन इन खरपतवारों को नष्ट करने के लिये उपयोग किये जाते है पर अगले वर्ष ये खरपतवार नये मजबूत रुप मे सामने आ जाते है। इन घातक खरपतवारों के उपयोगों की दिशा मे शोध न केवल रसायनों के वातावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को कम कर सकता है बल्कि किसानों को अतिरिक्त आय और अच्छा स्वास्थ्य भी प्रदान कर सकता है।